**डॉ. सुधीर कुमार**
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रुड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

**निदेशक की कलम से.....**

आपको यह अवगत कराते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की विगत 30 वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रवाहिनी" के 30वें अंक का हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर प्रकाशन कर रहा है। जैसा कि यह सर्वविदित है कि सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं हिंदी में सृजनात्मक कार्य को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ हिंदी गृह पत्रिकाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए एक अनुकूल वातावरण सृजित होता है तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हिंदी में काम करने के प्रति नवीन चेतना का सृजन होता है। इससे हम भाषायी दृष्टि से भी आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्र–पत्रिकाएं सभी कार्यालयों के बीच एक वैचारिक एवं सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में इन हिंदी पत्रिकाओं ने सदैव एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रसन्नता की बात यह है कि आज सिर्फ हिंदी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं अपितु हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है।

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि संस्थान, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी उद्देश्यों के शत–प्रतिशत अनुपालन हेतु प्रतिबद्ध है। संस्थान का प्रयास है कि वह राजभाषा नीति के प्रचार–प्रसार के लिए दैनिक कार्यों के साथ–साथ हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन, हिंदी कार्यशालाओं/संगोष्ठियों/जनजागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन को भी समुचित बढ़ावा दिया जाए। आज तक हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन केवल हिंदी साहित्य, मनोरंजन, राजनीति और सामाजिक प्रसंगों से संबंधित क्षेत्रों तक ही सीमित था। परन्तु अब तकनीकी, विज्ञान, अनुसंधान, चिकित्सा आदि विषयों से संबंधित पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं।

संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में अपनी रचनाएं देकर राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अपनी रूचि और समर्पण को प्रदर्शित करते हैं। हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालयी कार्यों के निष्पादन के लिए हिंदी का एक अनुकूल वातावरण तैयार होता है और लेखकों की रचनाधर्मिता को भी प्रोत्साहन मिलता है।

इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारी तथा विद्वत लेखकगण धन्यवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका की अपार सफलता एवं श्रीवृद्धि की मंगल कामना करता हूं।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत अंक सभी पाठकों को अत्यन्त उपयोगी, महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लगेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

**(सुधीर कुमार)**